माँ काली चालीसा पाठ

॥ दोहा ॥

जयकाली कलिमलहरण, महिमा अगम अपार ।
महिष मर्दिनी कालिका, देहु अभय अपार ॥

॥ चौपाई ॥

अरि मद मान मिटावन हारी ।
मुण्डमाल गल सोहत प्यारी ॥१॥

अष्टभुजी सुखदायक माता ।
दुष्टदलन जग में विख्याता ॥२॥

भाल विशाल मुकुट छवि छाजै ।
कर में शीश शत्रु का साजै ॥३॥

दूजे हाथ लिए मधु प्याला ।
हाथ तीसरे सोहत भाला ॥४॥

चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे ।
छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे ॥५॥

सप्तम करदमकत असि प्यारी ।
शोभा अद्भुत मात तुम्हारी ॥६॥

अष्टम कर भक्तन वर दाता ।
जग मनहरण रूप ये माता ॥७॥

भक्तन में अनुरक्त भवानी ।
निशदिन रटें ऋषी-मुनि ज्ञानी ॥८॥

महशक्ति अति प्रबल पुनीता ।
तू ही काली तू ही सीता ॥९॥

पतित तारिणी हे जग पालक ।
कल्याणी पापी कुल घालक ॥१०॥

शेष सुरेश न पावत पारा ।
गौरी रूप धर्यो इक बारा ॥११॥

तुम समान दाता नहिं दूजा ।
विधिवत करें भक्तजन पूजा ॥१२॥

रूप भयंकर जब तुम धारा ।
दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा ॥१३॥

नाम अनेकन मात तुम्हारे ।
भक्तजनों के संकट टारे ॥१४॥

कलि के कष्ट कलेशन हरनी ।
भव भय मोचन मंगल करनी ॥१५॥

महिमा अगम वेद यश गावैं ।
नारद शारद पार न पावैं ॥१६॥

भू पर भार बढ़्यौ जब भारी ।
तब तब तुम प्रकटीं महतारी ॥१७॥

आदि अनादि अभय वरदाता ।
विश्वविदित भव संकट त्राता ॥१८॥

कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा ।
उसको सदा अभय वर दीन्हा ॥१९॥

ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा ।
काल रूप लखि तुमरो भेषा ॥२०॥

कलुआ भैंरों संग तुम्हारे ।
अरि हित रूप भयानक धारे ॥२१॥

सेवक लांगुर रहत अगारी ।
चौसठ जोगन आज्ञाकारी ॥२२॥

त्रेता में रघुवर हित आई ।
दशकंधर की सैन नसाई ॥२३॥

खेला रण का खेल निराला ।
भरा मांस-मज्जा से प्याला ॥२४॥

रौद्र रूप लखि दानव भागे ।
कियौ गवन भवन निज त्यागे ॥२५॥

तब ऐसौ तामस चढ़ आयो ।
स्वजन विजन को भेद भुलायो ॥२६॥

ये बालक लखि शंकर आए ।
राह रोक चरनन में धाए ॥२७॥

तब मुख जीभ निकर जो आई ।
यही रूप प्रचलित है माई ॥२८॥

बाढ़्यो महिषासुर मद भारी ।
पीड़ित किए सकल नर-नारी ॥२९॥

करूण पुकार सुनी भक्तन की ।
पीर मिटावन हित जन-जन की ॥३०॥

तब प्रगटी निज सैन समेता ।
नाम पड़ा मां महिष विजेता ॥३१॥

शुंभ निशुंभ हने छन माहीं ।
तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं ॥३२॥

मान मथनहारी खल दल के ।
सदा सहायक भक्त विकल के ॥३३॥

दीन विहीन करैं नित सेवा ।
पावैं मनवांछित फल मेवा ॥३४॥

संकट में जो सुमिरन करहीं ।
उनके कष्ट मातु तुम हरहीं ॥३५॥

प्रेम सहित जो कीरति गावैं ।
भव बन्धन सों मुक्ती पावैं ॥३६॥

काली चालीसा जो पढ़हीं ।
स्वर्गलोक बिनु बंधन चढ़हीं ॥३७॥

दया दृष्टि हेरौ जगदम्बा ।
केहि कारण मां कियौ विलम्बा ॥३८॥

करहु मातु भक्तन रखवाली ।
जयति जयति काली कंकाली ॥३९॥

सेवक दीन अनाथ अनारी ।
भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी ॥४०॥

॥ दोहा ॥

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ ।
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ ॥

paramsoul.com